९. आदमी का अनुपात

कविता का सारांश

कविता में कवि ने मनुष्य के अस्तित्व की तुलना विशाल ब्रह्मांड से की है। वे बताते हैं कि एक कमरे से शुरू होकर घर, मोहल्ला, नगर, देश, पृथ्वी और फिर अनगिनत तारों से भरे ब्रह्मांड तक का विस्तार कितना विशाल है। करोड़ों ग्रहों और ब्रह्मांडों में पृथ्वी मात्र एक छोटी-सी इकाई है। इसके सामने मनुष्य का आकार और भी छोटा प्रतीत होता है।

इतनी विशाल सृष्टि के बावजूद मनुष्य अपने अहंकार, ईर्ष्या, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास में डूबा हुआ है। वह खुद को दूसरों का स्वामी मानता है और समाज में दीवारें खड़ी करता है। कवि यह व्यंग्यात्मक रूप से कहते हैं कि मनुष्य देशों को छोड़िए, एक छोटे-से कमरे में भी अपनी-अपनी अलग दुनिया रच लेता है।

मुख्य संदेश:

- मनुष्य को अपने छोटेपन को समझकर अहंकार त्यागना चाहिए।
- प्रेम, सहयोग और सामंजस्य का मार्ग अपनाना चाहिए।
- विशाल सृष्टि के सामने विनम्रता आवश्यक है।

कठिन शब्द

- **अनुपात** - तुलना, सामंजस्य, समानुपात
- **मुहल्ला** - मोहल्ला, रहने का छोटा क्षेत्र/इलाका
- **नगर** - शहर
- **प्रदेश** - राज्य, बड़ा भौगोलिक क्षेत्र
- **पृथ्वी** - धरती
- **नक्षत्र** - तारे, सितारे
- **परिधि** - चारों ओर का घेरा
- **नभ गंगा** - आकाशगंगा (Milky Way)
- **ब्रह्मांड** - सृष्टि का संपूर्ण विस्तार
- **ईर्ष्या** - जलन, द्वेष
- **अहंकार** - घमंड, अपने ऊपर अत्यधिक गर्व
- **स्वार्थ** - अपने लाभ के लिए सोच
- **घृणा** - नफ़रत, द्वेष
- **अविश्वास** - भरोसा न होना
- **संख्यातीत** - जिसका संख्या में अनुमान न हो सके
- **शंख** - सीपी; यहाँ बहुत बड़े आकार का संकेत
- **दीवारें उठाना** - विभाजन करना, अलगाव पैदा करना
- **दुनिया रचाना** - अपनी अलग सोच और संसार बनाना

www.onepointlearning.com

पाठ से

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. **कविता के अनुसार ब्रह्मांड में मानव का स्थान कैसा है?**
   - पृथ्वी पर सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण
   - सूर्य, चंद्र आदि सभी नक्षत्रों से बड़ा
   - ब्रह्मांड की तुलना में अत्यंत सूक्ष्म ★
   - समस्त प्रकृति पर शासन करने वाला
2. **कविता में मुख्य रूप से किन दो वस्तुओं के अनुपात को दिखाया गया है?**
   - पृथ्वी और सूर्य
   - घर और कमरा
   - देश और नगर
   - मानव और ब्रह्मांड ★
3. **कविता के अनुसार मानव किन भावों और कार्यों में लिप्त रहता है?**
   - त्याग, ज्ञान और प्रेम में
   - ईर्ष्या, अहंकार, घृणा में ★
   - सेवा और परोपकार में
   - उदारता, धर्म और न्याय में
4. **कविता के अनुसार मानव का सबसे बड़ा दोष क्या है?**

- वह अपनी सीमाओं और दुर्बलताओं को नहीं समझता।
- वह दूसरों पर शासन स्थापित करना चाहता है। ★
- वह प्रकृति के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता है।
- वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है। ★

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर क्यों चुने?

उत्तर:

1. मैंने ये उत्तर इसलिए चुने क्योंकि कविता में कवि ने मनुष्य को ब्रह्मांड के सामने बहुत छोटा दिखाया है।
2. कवि बताते हैं कि पृथ्वी भी ब्रह्मांड में बहुत छोटी है, और मनुष्य का अस्तित्व उससे भी छोटा है।
3. फिर भी मनुष्य ईर्ष्या, अहंकार और घृणा में डूबा है, और अपने को दूसरों का स्वामी मानता है।
4. मनुष्य का सबसे बड़ा दोष यह है कि वह अपने छोटेपन को भूलकर अहंकारी हो जाता है और विभाजन की दीवारें खड़ी करता है।

पंक्तियों पर चर्चा

नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। अपने समूह में इनके अर्थ पर चर्चा कीजिए और लिखिए—

(क) "अनगिनत नक्षत्रों में/पृथ्वी एक छोटी/करोड़ों में एक ही"

उत्तर: कवि कहते हैं कि ब्रह्मांड में असंख्य तारे, ग्रह और नक्षत्र हैं। उनमें हमारी पृथ्वी बहुत छोटी है और करोड़ों ग्रहों में यह एकमात्र ऐसी ग्रह है जहाँ जीवन है। यह पंक्ति हमें पृथ्वी की विशेषता और उसके छोटेपन का एहसास कराती है। इसके माध्यम से कवि यह बताना चाहते हैं कि विशाल ब्रह्मांड में पृथ्वी का स्थान बहुत छोटा है, इसलिए मनुष्य को विनम्र रहकर इसकी कद्र करनी चाहिए।

www.onepointlearning.com

(ख) "संख्यातीत शांत सी दीवारें उठाता है/अपने को दूजे का स्वामी बताता है"

उत्तर: कवि कहते हैं कि मनुष्य ने अपने चारों ओर अनगिनत दीवारें खड़ी कर ली हैं। ये दीवारें केवल ईंट-पत्थर की नहीं, बल्कि स्वार्थ, अहंकार, घृणा और अविश्वास की भी हैं। मनुष्य खुद को दूसरों का स्वामी मानता है और समाज में ऊँच-नीच, भेदभाव और अलगाव की भावना फैलाता है। यह पंक्ति मनुष्य के घमंड और विभाजनकारी मानसिकता पर व्यंग्य करती है और हमें सोचने पर मजबूर करती है कि इतनी विशाल सृष्टि में रहते हुए भी मनुष्य क्यों इतनी छोटी सोच रखता है।

(ग) "देशों की कौन कहे/एक कमरे में/दो दुनिया रचता है"

उत्तर: कवि कहते हैं कि मनुष्य सिर्फ देशों और समाजों को ही नहीं बाँटता, बल्कि एक छोटे से कमरे में भी अलग-अलग सोच और दुनिया बना लेता है। यह मनुष्य की संकीर्ण मानसिकता को दर्शाता है, जो बड़ी दुनिया में एकता स्थापित नहीं कर पाता और अपने आसपास भी विभाजन पैदा कर देता है। यह पंक्ति व्यंग्यात्मक रूप से मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति और छोटी सोच को उजागर करती है, जिससे समाज में प्रेम और सामंजस्य की भावना कमजोर हो जाती है।

मिलकर करें मिलान

नीचे दो स्तंभ दिए गए हैं। अपने समूह में चर्चा करके स्तंभ 1 की पंक्तियों का मिलान स्तंभ 2 में दिए गए सही अर्थ से कीजिए।

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	संख्यातीत शंख सी दीवारें	1. ब्रह्मांड की विशालता का प्रतीक
2.	पृथ्वी एक छोटी, करोड़ों में एक	2. आदमी के संकुचित होने का प्रतीक
3.	ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा	3. मनुष्य द्वारा खींची गई कृत्रिम सीमाएँ
4.	दो व्यक्ति कमरे में / कमरे से छोटे	4. सीमित स्थान में भी और अलगाव की प्रवृत्ति
5.	परिधि नभ गंगा की	5. पृथ्वी की अल्पता और अनोखेपन की ओर संकेत
6.	एक कमरे में दो दुनिया रचता	6. मनुष्य की नकारात्मक भावनाएँ

उत्तर:

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	संख्यातीत शंख सी दीवारें	★ 3. मनुष्य द्वारा खींची गई कृत्रिम सीमाएँ
2.	पृथ्वी एक छोटी, करोड़ों में एक	★ 5. पृथ्वी की अल्पता और अनोखेपन की ओर संकेत
3.	ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा	★ 6. मनुष्य की नकारात्मक भावनाएँ
4.	दो व्यक्ति कमरे में / कमरे से छोटे	★ 2. आदमी के संकुचित होने का प्रतीक
5.	परिधि नभ गंगा की	★ 1. ब्रह्मांड की विशालता का प्रतीक
6.	एक कमरे में दो दुनिया रचता	★ 4. सीमित स्थान में भी और अलगाव की प्रवृत्ति

www.onepointlearning.com

अनुपात

इस कविता में 'मानव' और 'ब्रह्मांड' के उदाहरण द्वारा व्यक्ति के अल्पत्व और सृष्टि की विशालता के अनुपात को दिखाया गया है। अपने साथियों के साथ मिलकर विचार कीजिए कि मानव को ब्रह्मांड जैसा विस्तार पाने के लिए इनमें से किन-किन गुणों या मूल्यों की आवश्यकता होगी? आपने ये गुण क्यों चुने, यह भी साझा कीजिए।

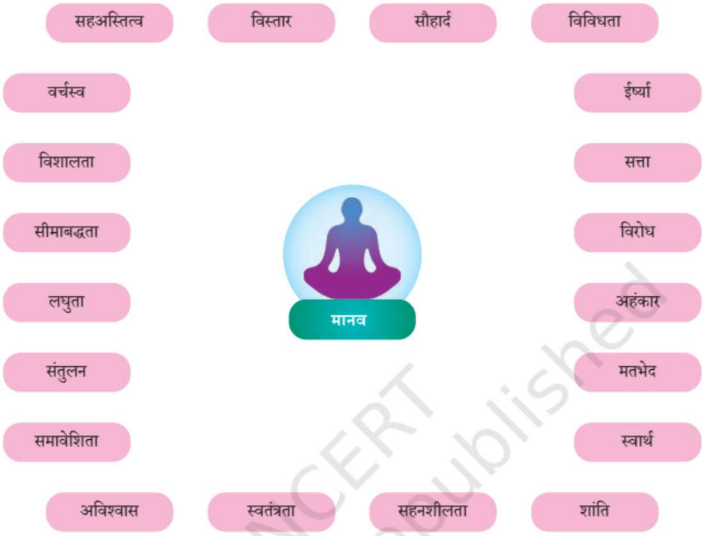

उत्तर: कविता में कवि ने दिखाया है कि ब्रह्मांड कितना विशाल है और मनुष्य उसका एक छोटा-सा अंश है। यदि मनुष्य को ब्रह्मांड जैसी विशालता और महत्ता प्राप्त करनी है, तो उसे इन गुणों और मूल्यों को अपनाना होगा:

1. **सहअस्तित्व** (Coexistence): हमें सभी जीवों और प्रकृति के साथ मिलजुलकर रहना सीखना होगा।
2. **विस्तार** (Broad-mindedness): सोच को बड़ा बनाना, सीमित मानसिकता को छोड़ना।
3. **सौहार्द** (Harmony): समाज में भाईचारे और प्रेम की भावना फैलाना।
4. **विविधता का सम्मान** (Respect for Diversity): विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और जीवनशैलियों को स्वीकार करना।
5. **संतुलन** (Balance): प्रकृति और जीवन में संतुलन बनाए रखना।
6. **समभावशीलता** (Equanimity): हर परिस्थिति में धैर्य और समान दृष्टि रखना।
7. **स्वतंत्रता** (Freedom): सही विचारों और कर्मों में स्वतंत्र रहना, दूसरों को स्वतंत्रता देना।
8. **सहनशीलता** (Tolerance): दूसरों की गलतियों और भिन्न विचारों को स्वीकार करने की क्षमता।
9. **शांति** (Peace): अपने मन और समाज में शांति का वातावरण बनाना।

चर्चा का सार: इन गुणों को अपनाने से मनुष्य का दृष्टिकोण सीमित नहीं रहेगा। वह स्वार्थ, ईर्ष्या, अहंकार और मतभेद जैसी नकारात्मक भावनाओं को छोड़कर ब्रह्मांड जैसी विशाल और उदार सोच का धनी बनेगा।

सोच-विचार के लिए

कविता को पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) कविता के अनुसार मानव किन कारणों से स्वयं को सीमाओं में बाँधता चला जाता है?

उत्तर: कविता के अनुसार मनुष्य अपने अहंकार, स्वार्थ, ईर्ष्या, घृणा और अविश्वास के कारण स्वयं को सीमाओं में बाँधता चला जाता है। उसने समाज में अनेक कृत्रिम दीवारें खड़ी कर दी हैं, जिससे उसका दृष्टिकोण संकीर्ण हो गया है और वह एक-दूसरे से अलगाव महसूस करता है।

(ख) यदि आपको इस कविता की एक पंक्ति को दीवार पर लिखना हो, जो आपको प्रतिदिन प्रेरित करे तो आप कौन-सी पंक्ति चुनेंगे और क्यों?

उत्तर: मैं यह पंक्ति चुनूंगा/चुनूंगी:
"करोड़ों में एक ही, सबको समेटे है परिधि नभ गंगा की।"
क्योंकि यह पंक्ति हमें याद दिलाती है कि पृथ्वी कितनी अनमोल है और हमें इसे सँभालना और इसकी रक्षा करनी चाहिए। यह पंक्ति हमें विनम्र और कृतज्ञ बनाती है।

(ग) कवि ने मानव की सीमाओं और कमियों की ओर ध्यान दिलाया है, लेकिन कहीं भी क्रोध नहीं दिखाया। आपको इस कविता का भाव कैसा लगा—व्यंग्य, करुणा, चिंता या कुछ और? क्यों?

उत्तर: कविता का भाव चिंता और करुणा से भरा हुआ लगता है। कवि ने मनुष्य के व्यवहार पर व्यंग्य किया है, लेकिन उसमें कठोरता नहीं है। इसके माध्यम से कवि हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि इतने विशाल ब्रह्मांड में रहते हुए भी मनुष्य क्यों छोटी सोच रखता है।

(घ) आपके अनुसार 'दीवारें उठाना' केवल ईंट-पत्थर से जुड़ा काम है या कुछ और भी हो सकता है? अपने विचारानुसार समझाइए।

उत्तर: 'दीवारें उठाना' केवल ईंट-पत्थर की दीवारें बनाने तक सीमित नहीं है। इसका मतलब मनुष्य के मन में खड़ी की गई मानसिक और सामाजिक सीमाएँ भी हैं, जैसे जाति, धर्म, भाषा, वर्ग, लिंग या आर्थिक भेदभाव। ये अदृश्य दीवारें समाज को बाँटती हैं। इन्हें तोड़कर ही सच्ची एकता लाई जा सकती है।

(ङ) मानवता के विकास में सहयोग, समर्पण और सहिष्णुता जैसी सकारात्मक प्रवृत्तियाँ ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ और घृणा जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों से कहीं अधिक प्रभावी हैं। उदाहरण देकर बताइए कि सहिष्णुता या सहयोग के कारण समाज में कैसे परिवर्तन आए हैं?

उत्तर:

- **सहयोग का उदाहरण:** स्वतंत्रता संग्राम में सभी धर्मों और वर्गों के लोगों के एकजुट होने से भारत को आज़ादी मिली। यह सहयोग और एकता का परिणाम था।
- **सहिष्णुता का उदाहरण:** भारत में अलग-अलग भाषाओं, संस्कृतियों और धर्मों के लोग शांति से रहते हैं। सहिष्णुता के कारण ही भारत विविधता में एकता का उदाहरण है।
- **समर्पण का उदाहरण:** सामाजिक कार्यकर्ता और वैज्ञानिकों के समर्पण से समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य और तकनीकी विकास संभव हुआ।

इससे पता चलता है कि सकारात्मक प्रवृत्तियाँ समाज को जोड़ती हैं और प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाती हैं।

अनुमान और कल्पना

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) मान लीजिए कि आप एक दिन के लिए पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित कर सकते हैं। अब आप मानव की कौन-कौन सी आदतों को बदलना चाहेंगे? क्यों?

उत्तर: यदि मुझे एक दिन के लिए पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करने का मौका मिले, तो मैं मनुष्य के अहंकार, स्वार्थ, ईर्ष्या और घृणा जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों को बदल दूँगा/दूँगी। मैं हर व्यक्ति के मन में प्रेम, सहयोग और सहिष्णुता की भावना जगाऊँगा ताकि समाज में कोई युद्ध, झगड़ा या अन्याय न हो। इस बदलाव से दुनिया शांति और खुशहाली का स्थान बन जाएगी।

www.onepointlearning.com

(ख) यदि आप अंतरिक्ष यात्री बन जाएँ और ब्रह्मांड के किसी दूसरे भाग में जाएँ तो आप किस स्थान (कमरा, घर, नगर आदि) को सबसे अधिक याद करेंगे और क्यों?

उत्तर: यदि मैं अंतरिक्ष यात्री बनकर ब्रह्मांड के किसी अन्य हिस्से में जाऊँ, तो मुझे सबसे अधिक अपना घर और परिवार याद आएगा। क्योंकि घर ही वह स्थान है जहाँ हमें प्रेम, सुरक्षा और अपनापन मिलता है। चाहे ब्रह्मांड कितना भी सुंदर क्यों न हो, अपने घर का सुकून कहीं और नहीं मिल सकता।

(ग) मान लीजिए कि एक बच्चा या बच्ची कविता में उल्लिखित सभी सीमाओं को पार कर सकता या सकती है—वह कहाँ तक जाएगा या जाएगी और क्या देखेगा? एक कल्पनात्मक यात्रा-वृत्तांत लिखिए।

उत्तर: यदि एक बच्चा कविता में बताई गई सभी सीमाओं को पार कर सकता है, तो वह पृथ्वी से निकलकर तारों और ग्रहों के बीच यात्रा करेगा। वह ब्रह्मांड की विशालता देखेगा और समझेगा कि मनुष्य का अस्तित्व कितना छोटा है। वह देखेगा कि अलग-अलग ग्रहों पर कैसी परिस्थितियाँ हैं और यह भी महसूस करेगा कि हमारी पृथ्वी कितनी अनोखी और अनमोल है। उसकी यह यात्रा हमें सिखाएगी कि हमें पृथ्वी का सम्मान करना चाहिए और मिल-जुलकर रहना चाहिए।

(घ) इस कविता को पढ़ने के बाद, आप स्वयं को ब्रह्मांड के अनुपात में कैसा अनुभव करते हैं? एक अनुच्छेद लिखिए —"मैं ब्रह्मांड में एक... हूँ।"

उत्तर: "मैं ब्रह्मांड में एक... हूँ।"

मैं ब्रह्मांड में एक छोटा-सा कण हूँ। ब्रह्मांड की अनंतता के सामने मेरा अस्तित्व बहुत छोटा है। लेकिन मेरी सोच, कर्म और प्रेम से मैं इस संसार को बेहतर बना सकता हूँ। यह समझकर मैं विनम्र और जिम्मेदार बनना चाहता हूँ।

(ङ) मान लीजिए कि किसी दूसरे संसार से आपके पास संदेश आया है कि उसे पृथ्वी के किसी व्यक्ति की आवश्यकता है। आप किसे भेजना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर: यदि किसी दूसरे संसार से संदेश आए कि उन्हें पृथ्वी से किसी व्यक्ति की आवश्यकता है, तो मैं एक वैज्ञानिक या समाजसेवी को भेजना चाहूँगा। क्योंकि वैज्ञानिक उन्हें नई जानकारियाँ देंगे और समाजसेवी मानवता और प्रेम का संदेश देंगे। इससे दूसरे संसार के लोगों को हमारे ज्ञान और संस्कृति का सही परिचय मिलेगा।

(च) कविता में 'ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ' जैसी प्रवृत्तियों की चर्चा की गई है। कल्पना कीजिए कि एक दिन के लिए ये सभी व्यक्तियों में समाप्त हो जाएँ तो उससे समाज में क्या-क्या परिवर्तन होगा?

उत्तर: यदि एक दिन के लिए सभी लोगों के मन से ईर्ष्या, अहं और स्वार्थ समाप्त हो जाएँ, तो समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा। लोग एक-दूसरे की मदद करेंगे, कोई युद्ध या झगड़ा नहीं होगा, गरीबी और भेदभाव खत्म हो जाएंगे। हर जगह शांति और समानता होगी और धरती एक सुंदर स्वर्ग जैसी बन जाएगी।

(छ) यदि आपको इस कविता का एक पोस्टर बनाना हो जिसमें इसके मूल भाव—'विराटता और लघुता' तथा 'मनुष्य का भ्रम'—दर्शाया जाए तो आप क्या चित्र, प्रतीक और शब्द उपयोग करेंगे? संक्षेप में बताइए।

उत्तर: यदि मुझे इस कविता का पोस्टर बनाना हो, तो:

- मैं पृथ्वी को छोटे नीले ग्रह के रूप में दिखाऊँगा जो ब्रह्मांड के विशाल आकाशगंगा में तैर रही हो।
- उसके आसपास अनगिनत तारे और ग्रह होंगे।
- चित्र के एक कोने में मनुष्य को अहंकार में डूबा दिखाऊँगा और दूसरे कोने में शांति का प्रतीक कबूतर और खुला आकाश बनाऊँगा।
- पोस्टर पर लिखूँगा: "ब्रह्मांड की विराटता को समझो, अहंकार को छोड़ो।"

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'सृष्टि' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए—

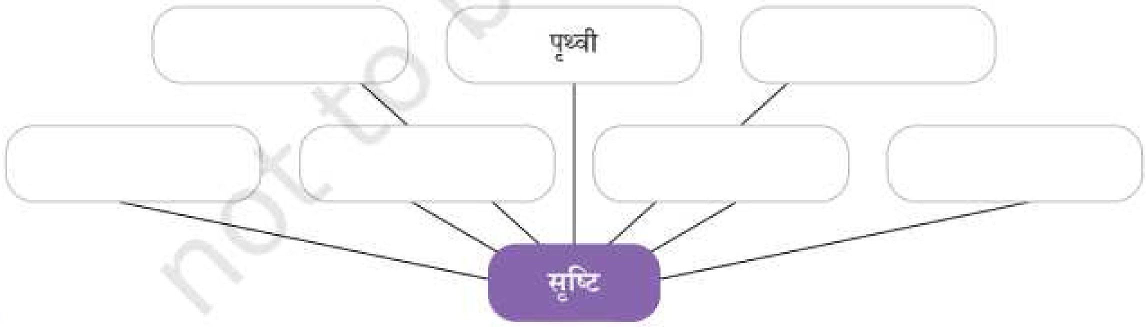

उत्तर: 'सृष्टि' से जुड़े शब्द:

- पृथ्वी
- प्रकृति
- जीवन
- ब्रह्मांड
- मानवता
- संसार
- आकाशगंगा

सृजन

(क) कविता में कमरे से लेकर ब्रह्मांड तक का विस्तार दिखाया गया है। इस क्रम को अपनी तरह से एक रेखाचित्र, सीढ़ी या 'मानसिक-चित्रण' (माइंड-मैप) द्वारा प्रदर्शित कीजिए। प्रत्येक स्तर पर कुछ विशेषताएँ लिखिए, जैसे— पास-पड़ोस की एक विशेष बात, नगर का कोई स्थान, देश की विविधता आदि। उसके नीचे एक पंक्ति में इस प्रश्न का उत्तर लिखिए—"मैं इस चित्र में कहाँ हूँ और क्यों?"

उत्तर: रेखाचित्र/माइंड-मैप:

- **कमरा**: मेरा छोटा-सा कमरा, जहाँ मेरी किताबें और मेज है। यह मेरी निजी जगह है।
- **घर**: मेरे परिवार के सदस्य, हमारे पालतू जानवर और रोज की बातचीत। यह मेरी सुरक्षा और आराम की जगह है।
- **पड़ोस**: मेरे घर के आसपास की गलियाँ, जहाँ बच्चे खेलते हैं और लोग एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं।
- **नगर/शहर:** मेरे शहर की भीड़भाड़ वाली सड़कें, ऐतिहासिक स्थल और शॉपिंग मॉल। यह काम और गतिविधियों का केंद्र है।
- **देश**: मेरे देश की भाषा, संस्कृति, और विविध भू-दृश्य। यह मेरी पहचान का हिस्सा है।
- **पृथ्वी**: हरे-भरे जंगल, विशाल महासागर और ऊँचे पहाड़। यह वह ग्रह है जहाँ हम सब रहते हैं।
- **ब्रह्मांड**: अनंत तारे, ग्रह, आकाशगंगाएँ और अंतरिक्ष की विशालता। यह सब कुछ समाहित करता है।

मैं इस चित्र में कहाँ हूँ और क्यों? - मैं इस चित्र में अपने कमरे और घर में हूँ, क्योंकि यहीं से मेरे जीवन की शुरुआत होती है और यहीं से मेरा जुड़ाव बाहरी दुनिया से होता है।

(ख) अगर इसी कविता की तरह कोई कहानी लिखनी हो जिसका नाम हो 'ब्रह्मांड में मानव' तो उसको आरंभ कैसे करेंगे? कुछ वाक्य लिखिए।

उत्तर: 'ब्रह्मांड में मानव' कहानी की शुरुआत:

"असीम ब्रह्मांड के अनगिनत तारों के बीच पृथ्वी एक नीला मोती थी। इस छोटे से ग्रह पर मानव ने सभ्यता रची, सीमाएँ बनाईं और अपनी दुनिया को कई हिस्सों में बाँट दिया। लेकिन जब उसने अंतरिक्ष से पृथ्वी को देखा, तो समझ आया कि यह तो सबके लिए एक ही घर है, जिसे उसने अपने अहंकार से खंड-खंड कर दिया था..."

(ग) 'एक कमरे में दो दुनिया रचता है' पंक्ति को ध्यान से पढ़िए। अगर आपसे कहा जाए कि आप ऐसी दुनिया बनाइए जिसमें कोई दीवार न हो तो वह कैसी होगी? उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर: "एक ऐसी दुनिया जहाँ कोई दीवार न हो, वहाँ सभी लोग मिलजुलकर रहेंगे। न कोई धर्म या जाति के नाम पर भेदभाव होगा, न ही कोई सीमाएँ। सभी लोग एक-दूसरे का सम्मान करेंगे। वहाँ प्यार, शांति और सहयोग का माहौल होगा। बच्चे बिना डर के खेलेंगे, हर कोई अपनी राय खुलकर कह सकेगा। यह दुनिया सच में एक परिवार जैसी होगी, जिसमें कोई अलगाव नहीं होगा।"

(घ) एक चित्र श्रृंखला बनाइए जिसमें ये क्रम दिखें—

आदमी → कमरा → घर → पड़ोसी क्षेत्र → नगर → देश → पृथ्वी → ब्रह्मांड

प्रत्येक चित्र में आकार का अनुपात दिखाया जाए जिससे यह स्पष्ट हो कि आदमी कितना छोटा है।

उत्तर: चित्र श्रृंखला का विचार:

आप एक चित्र-श्रृंखला बना सकते हैं:

- सबसे पहले एक छोटा-सा आदमी बनाइए।
- उसके बाद एक छोटा कमरा।
- फिर एक बड़ा घर।
- उसके बाद पड़ोस / मोहल्ला।
- फिर एक बड़ा नगर।
- फिर पूरा देश।
- उसके बाद पृथ्वी।
- अंत में ब्रह्मांड का अनंत विस्तार।

चित्रों का आकार इस प्रकार बढ़ाएँ कि आदमी सबसे छोटा और ब्रह्मांड सबसे बड़ा दिखाई दे। इससे यह स्पष्ट होगा कि मनुष्य का स्थान ब्रह्मांड के मुकाबले बहुत छोटा है।

कविता की रचना

'दो व्यक्ति कमरे में
कमरे से छोटे—'

इन पंक्तियों में '—' चिह्न पर ध्यान दीजिए। क्या आपने इस चिह्न को पहले कहीं देखा है? इस चिह्न को 'निर्देशक चिह्न' कहते हैं। यह एक प्रकार का विराम चिह्न है जो किसी बात को आगे बढ़ाने या स्पष्ट करने के लिए उपयोग होता है। यह किसी विषय की अतिरिक्त जानकारी, जैसे—व्याख्या, उदाहरण या उद्धरण देने के लिए उपयोग होता है। इस कविता में इस चिह्न का प्रयोग एक ठहराव, सोच का संकेत और आगे आने वाले महत्त्वपूर्ण विचार की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया है। यह संकेत देता है कि अब कुछ ऐसा कहा जाने वाला है जो पाठक को सोचने पर विवश करेगा।

इस कविता में ऐसी अनेक विशेषताएँ छिपी हैं, जैसे—अधिकतर पंक्तियों का अंतिम शब्द 'में' है, बहुत छोटी-छोटी पंक्तियाँ हैं आदि।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर कविता की अन्य विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर: कविता की अन्य विशेषताएँ

1. **संक्षिप्त पंक्तियाँ:** कविता की अधिकतर पंक्तियाँ छोटी और सरल हैं, जिससे उनका प्रभाव गहरा होता है।
2. **दोहराव :** "कमरा है घर में, घर है मोहल्ले में..." जैसी पंक्तियों में दोहराव का प्रयोग कर विस्तार को दिखाया गया है।
3. **विराटता और लघुता का चित्रण:** छोटे कमरे से लेकर विशाल ब्रह्मांड तक का चित्रण करके अनुपात को स्पष्ट किया गया है।
4. **व्यंग्य का प्रयोग:** कवि ने मानव के अहंकार, ईर्ष्या और स्वार्थ पर तीखा व्यंग्य किया है।
5. **सरल भाषा:** कविता में बहुत सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिससे संदेश स्पष्ट रूप से समझ आता है।
6. **विराम और निर्देशक चिह्न का उपयोग:** '—' जैसे चिह्न से ठहराव लाकर आगे के विचार को महत्वपूर्ण बनाया गया है।
7. **चित्रात्मकता:** कविता पढ़ते समय हमारे सामने ब्रह्मांड की विशालता और मनुष्य का छोटा-सा अस्तित्व स्पष्ट चित्र की तरह उभरता है।
8. **नकारात्मक प्रवृत्तियों पर आलोचना: ईर्ष्या, स्वार्थ, घृणा, अहंकार जैसी बुराइयों को उजागर किया गया है।**
9. **दर्शनात्मक भाव:** कविता गहरे विचारों से भरी है और हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है।

कक्षा में साझा करने का तरीका:

- विद्यार्थी समूह में इन बिंदुओं को पोस्टर, चार्ट या स्लाइड में लिखकर प्रस्तुत कर सकते हैं।
- हर बिंदु के साथ कविता की कोई एक पंक्ति जोड़ सकते हैं।

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ झलकती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए—

क्रम	कविता की विशेषताएँ	सही पंक्तियाँ
1.	सरल वाक्य के शब्दों को विशेष क्रम में लगाया गया है।	1. संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है
2.	मुहावरे का प्रयोग किया गया है।	2. कमरा है घर में, घर है मोहल्ले में, मोहल्ला नगर में.
3.	छोटे से बड़े की ओर विस्तार देने के लिए शब्दों को दोहराया गया है।	3. देशों की कौन कहे, एक कमरे में दो दुनिया रचता है
4.	प्रश्न शैली में व्यंग्य किया गया है।	4. कमरा है घर में

क्रम	कविता की विशेषताएँ	सही पंक्तियाँ
5.	**अतिशयोक्ति से भरा कथन है (बढ़ा-चढ़ाकर कहना)।**	**5. यह है अनुपात आदमी का विराट से**
6.	**मानव के अहंकार का तीखा व्यंग्य किया गया है।**	**6. अपने को दूजे का स्वामी बताता है**

उत्तर:

क्रम	कविता की विशेषताएँ	सही पंक्तियाँ
1.	**सरल वाक्य के शब्दों को विशेष क्रम में लगाया गया है।**	4. कमरा है घर में
2.	**मुहावरे का प्रयोग किया गया है।**	**1. संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है**
3.	**छोटे से बड़े की ओर विस्तार देने के लिए शब्दों को दोहराया गया है।**	2. कमरा है घर में, घर है मोहल्ले में, मोहल्ला नगर में...
4.	**प्रश्न शैली में व्यंग्य किया गया है।**	3. देशों की कौन कहे, एक कमरे में दो दुनिया रचता है
5.	**अतिशयोक्ति से भरा कथन है (बढ़ा-चढ़ाकर कहना)।**	5. यह है अनुपात आदमी का विराट से
6.	**मानव के अहंकार का तीखा व्यंग्य किया गया है।**	6. अपने को दूजे का स्वामी बताता है

कविता का सौंदर्य

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने समूह में मिलकर खोजिए। इन प्रश्नों से आप कविता का आनंद और अच्छी तरह से ले सकेंगे।

(क) कविता में अलग-अलग प्रकार से ब्रह्मांड की विशालता को व्यक्त किया गया है। उनकी पहचान कीजिए।

उत्तर: कविता में ब्रह्मांड की विशालता व्यक्त करने के तरीके:

- **छोटे से बड़े का क्रम:** "कमरा → घर → मोहल्ला → नगर → प्रदेश → देश → पृथ्वी → ब्रह्मांड" इस क्रम से विशालता दिखाई गई है।
- **गणनातीत संख्या का प्रयोग:** "अनगिनत नक्षत्रों में", "करोड़ों में एक ही" जैसी पंक्तियाँ ब्रह्मांड की अनंतता दर्शाती हैं।
- **आकाशगंगा का उल्लेख:** "परिधि नभ गंगा की" से ब्रह्मांड के विस्तार का चित्र खींचा गया है।
- **काव्यात्मक अतिशयोक्ति:** "लाखों ब्रह्मांडों में अपना एक ब्रह्मांड" जैसी पंक्तियाँ ब्रह्मांड की असीमता को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाती हैं।

(ख) "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है"
"अपने को दूजे का स्वामी बताता है"
"एक कमरे में
दो दुनिया रचता है"

कविता में ये सारी क्रियाएँ मनुष्य के लिए आई हैं। आप अपने अनुसार कविता में नई क्रियाओं का प्रयोग करके कविता की रचना कीजिए।

उत्तर: नई क्रियाओं के साथ कविता की रचना (उदाहरण):

मूल पंक्तियाँ:

- "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है"
- "अपने को दूजे का स्वामी बताता है"
- "एक कमरे में दो दुनिया रचता है"

नई रचना:

- "अदृश्य रेखाएँ खींचता है।"

- "प्रकृति के उपहारों पर अधिकार जताता है।"
- "छोटी-सी सोच से रिश्तों को तोड़ता है।"
- "आकाश को बाँटने के सपने बुनता है।"
- "स्वार्थ की डोर से मन को बाँधता है।"

आपके शब्द

"सबको समेटे है
परिवर्ध नम गंगा की"

आपने 'आकाशगंगा' शब्द सुना और पढ़ा होगा लेकिन कविता में 'नम गंगा' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है।

आप भी अपने समूह में मिलकर इसी प्रकार दो शब्दों को मिलाकर नए शब्द बनाइए।

उत्तर: "नभ गंगा" (आकाशगंगा) की तरह दो शब्दों को मिलाकर बने नए शब्द:

- जल + प्रपात = जलप्रपात
- चंद्र + प्रकाश = चंद्रप्रकाश
- रजत + रेखा = रजतरेखा
- धूल + कण = धूलिकण
- सूर्य + उदय = सूर्योदय
- नभ + मंडल = नभमंडल

आपके प्रश्न

"हर ब्रह्मांड में
कितनी ही पृथ्वीयाँ
कितनी ही भूमियाँ
कितनी ही सुरतिया"

क्या आपके मस्तिष्क में कभी इस प्रकार के प्रश्न आते हैं? अवश्य आते होंगे। अपने समूह के साथ मिलकर अपने मन में आने वाले प्रश्नों की सूची बनाइए। अपने शिक्षक, इंटरनेट और पुस्तकालय की सहायता से इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास कीजिए।

उत्तर: कविता जैसी सोच से मन में उठने वाले प्रश्नों की सूची (उदाहरण):

- क्या ब्रह्मांड के हर कोने में जीवन संभव है?
- पृथ्वी का भविष्य कैसा होगा?
- क्या तारों और ग्रहों की गिनती की जा सकती है?
- क्या इंसान कभी सभी ब्रह्मांडों की खोज कर पाएगा?
- पृथ्वी पर शांति लाना इतना कठिन क्यों है?
- क्या अंतरिक्ष का कोई अंत है?

विशेषण और विशेष्य

"पृथ्वी एक छोटी"

यहाँ 'छोटी' शब्द 'पृथ्वी' की विशेषता बता रहा है अर्थात 'छोटी' 'विशेषण' है। 'पृथ्वी' एक संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता बताई जा रही है। अर्थात 'पृथ्वी' 'विशेष्य' शब्द है।

अब आप नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य शब्दों को पहचानकर लिखिए—

पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1. दो व्यक्ति कमरे में		
2. अनगिन नक्षत्रों में		
3. लाखों ब्रह्मांडों में		
4. अपना एक ब्रह्मांड		

www.onepointlearning.com

पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
5. संख्यातीत शंख सी		
6. एक कमरे में		
7. दो दुनिया रचता है		

उत्तर:

पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1. दो व्यक्ति कमरे में	दो	व्यक्ति
2. अनगिन नक्षत्रों में	अनगिन	नक्षत्रों
3. लाखों ब्रह्मांडों में	लाखों	ब्रह्मांडों
4. अपना एक ब्रह्मांड	एक / अपना	ब्रह्मांड
5. संख्यातीत शंख सी	संख्यातीत	शंख
6. एक कमरे में	एक	कमरा
7. दो दुनिया रचता है	दो	दुनिया

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) कोई ऐसी स्थिति बताइए जहाँ 'अनुपात' बिगड़ गया हो—जैसे काम का बोझ अधिक और समय कम।

उत्तर: ऐसी स्थिति जहाँ 'अनुपात' बिगड़ गया हो:

- परीक्षा के समय पढ़ने के लिए बहुत ज्यादा पाठ्यक्रम हो और समय बहुत कम हो।
- काम का बोझ इतना हो कि आराम और खेलकूद के लिए समय न मिले।
- मोबाइल या टीवी देखने में समय अधिक देना और पढ़ाई कम करना।

(ख) आप अपने परिवार, विद्यालय या मोहल्ले में 'विराटता' (विशाल दृष्टिकोण) कैसे ला सकते हैं? कुछ उपाय सोचकर लिखिए। (संकेत—किसी को अनदेखा न करना, सबकी सहायता करना आदि)

उत्तर: परिवार, विद्यालय या मोहल्ले में विराट दृष्टिकोण लाने के उपाय:

- किसी को छोटा-बड़ा समझकर भेदभाव न करना।
- ज़रूरतमंद की मदद करना और सहयोग का भाव रखना।
- सभी की राय का सम्मान करना।
- सफाई और हरियाली बनाए रखना।
- सभी को एक परिवार जैसा समझना।

(ग) 'करोड़ों में एक ही पृथ्वी'—इस पंक्ति को पढ़कर आपके मन में क्या भाव आता है? आप इस अनोखी पृथ्वी को सुरक्षित रखने के लिए क्या-क्या करेंगे?

उत्तर: 'करोड़ों में एक ही पृथ्वी' पर विचार और संकल्प:

- यह पंक्ति हमें बताती है कि पृथ्वी कितनी अनमोल है।
- हमें पेड़-पौधे लगाकर, पानी बचाकर, प्रदूषण कम करके इसे सुरक्षित रखना चाहिए।
- प्लास्टिक का कम उपयोग करना, ऊर्जा बचाना और पर्यावरण के प्रति जागरूक रहना ज़रूरी है।

(घ) कविता हमें 'अपने को दूजे का स्वामी बताने' के प्रति सचेत करती है। आप अपने किन-किन गुणों को प्रबल करेंगे ताकि आपमें ऐसा भाव न आए?

उत्तर: स्वामीभाव से बचने के लिए अपने गुण प्रबल करना:

- विनम्रता (Humility) बढ़ाना।
- दूसरों की मदद करने की आदत डालना।
- धैर्य और सहनशीलता का अभ्यास करना।
- टीमवर्क और बराबरी का भाव रखना।
- आत्म-चिंतन करके अपनी कमियों को सुधारना।

(ङ) अपने जीवन में ऐसी तीन 'दीवारों' के विषय में सोचिए जो आपने स्वयं खड़ी की हैं (जैसे—डर, संकोच आदि)। फिर एक योजना बनाइए कि आप उन्हें कैसे तोड़ेंगे? क्या समाज में भी ऐसी दीवारें होती हैं? उन्हें गिराने में हम कैसे सहायता कर सकते हैं?

उत्तर: अपने जीवन की 3 दीवारें और उन्हें तोड़ने की योजना:

- **डर**: धीरे-धीरे नए काम करने की हिम्मत जुटाऊँगा।
- **संकोच**: सबके सामने बोलने और अपने विचार साझा करने का अभ्यास करूँगा।
- **आत्मविश्वास की कमी**: अपने काम पर भरोसा रखूँगा और हर सफलता से सीखूँगा।

समाज की दीवारें:

- जाति, धर्म, लिंग, भाषा और वर्ग के भेदभाव।
- इन्हें हटाने के लिए जागरूकता अभियान चलाना, सबको समान मानना और एक-दूसरे का सम्मान करना ज़रूरी है।

संख्यातीत शंख

"संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है"

शंख का अर्थ है—100 पद्म की संख्या।

नीचे भारतीय संख्या प्रणाली एक तालिका के रूप में दी गई है।

तालिका के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर खोजिए—

1. जिस संख्या में 15 शून्य होते हैं, उसे क्या कहते हैं?

उत्तर: पंद्रह (15) शून्यों वाली संख्या = पद्म (10^{15})।

2. महाशंख में कितने शून्य होते हैं?

उत्तर: महाशंख = 10^{19}, यानी उन्नीस (19) शून्य।

3. एक लाख में कितने हजार होते हैं?

उत्तर: एक लाख (1,00,000) में 100 हजार होते हैं (1,00,000 ÷ 1,000 = 100)।

4. उपर्युक्त तालिका के अनुसार सबसे छोटी और सबसे बड़ी संख्या कौन-सी है?

उत्तर: सबसे छोटी संख्या: एक (इकाई) = 10^0; सबसे बड़ी: महाशंख = 10^{19}।

5. दस करोड़ और एक अरब को जोड़ने पर कौन-सी संख्या आएगी?

उत्तर: दस करोड़ (10^8) + एक अरब (10^9) = 1,10,00,00,000 = एक अरब दस करोड़ (= 110 करोड़)।

समावेशन और समानता

जैसे पृथ्वी अनगिनत नक्षत्रों में एक छोटा-सा ग्रह है, वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह विशेष आवश्यकता वाला हो या न हो, समाज का एक महत्त्वपूर्ण भाग है।

एक समूह चर्चा आयोजित करें जिसमें सभी मानवों के लिए समान अवसरों की आवश्यकता पर बल दिया जाए (भले ही उनका जेंडर, आय, मत, विश्वास, शारीरिक रूप, रंग या आकार-प्रकार आदि कैसा भी हो)।

उत्तर: हमारे समाज में हर व्यक्ति का अपना महत्व है। जैसे ब्रह्मांड के असंख्य ग्रहों में पृथ्वी एक अनमोल ग्रह है, वैसे ही प्रत्येक इंसान अद्वितीय और मूल्यवान है। व्यक्ति का जेंडर, आर्थिक स्थिति, रंग, विश्वास, शारीरिक क्षमता या रूप-रंग चाहे जैसा भी हो, उसे समान सम्मान और अवसर मिलना चाहिए।

समाज में समान अवसर देने से:

- हर कोई अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को विकसित कर सकता है।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चे और व्यक्ति भी अपनी शिक्षा, खेल, कला और रोजगार के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं।
- भेदभाव खत्म होने से समाज में प्रेम, शांति और सहयोग का वातावरण बनेगा।
- विविधता को अपनाने से समाज और अधिक मजबूत और रचनात्मक बनेगा।

हमें स्कूलों, कार्यस्थलों और समाज में समावेशन (Inclusion) को बढ़ावा देना चाहिए:

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सुविधाएँ (रैंप, सहायक सामग्री) उपलब्ध कराना।
- सभी जाति, धर्म, लिंग के लोगों को समान सम्मान देना।
- हर व्यक्ति को अपने विचार रखने की स्वतंत्रता देना।
- खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सभी को समान रूप से भाग लेने का मौका देना।

इस तरह का समाज वास्तव में 'विराट दृष्टिकोण' वाला होगा, जहाँ हर इंसान अपने आप को महत्वपूर्ण महसूस करेगा।

निष्कर्ष: "जब हम विविधता को अपनाते हैं और समान अवसर देते हैं, तभी हम एक न्यायपूर्ण और संतुलित समाज का निर्माण कर सकते हैं।"

आज की पहेली

पता लगाइए कि कौन-सा अंतरिक्ष यान कौन-से ग्रह पर जाएगा—

उत्तर:

पहला अंतरिक्ष यान (सबसे बाईं ओर): नीले और हरे ग्रह पर जाएगा।

दूसरा अंतरिक्ष यान (बाएँ से दूसरा): लाल और गुलाबी ग्रह पर जाएगा।

तीसरा अंतरिक्ष यान (बाएँ से तीसरा): नीली और बैंगनी धारियों वाले ग्रह पर जाएगा।

चौथा अंतरिक्ष यान (सबसे दाईं ओर): पीले और नारंगी ग्रह पर जाएगा।

www.onepointlearning.com